आईआईएम रांची में भारतीय सिनेमा पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

मनोरंजन ही नहीं, सामाजिक चेतना का भी माध्यम हैं फिल्में : प्रो मोनिया

आइआइएम रांची में आयोज़ित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल शिक्षाविद्.

- सम्मेलन में फिल्मकारों, शिक्षाविदों, प्रबंधन विशेषज्ञों और शोधार्थियों ने लिया भाग
- 'सोशल रियलिटीज एंड मैनेजरियल इनसाइट्स' पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

रांची. आइआइएम रांची में शुक्रवार को इंडियन सिनेमा पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हुआ. इसका थीम 'सोशल रियलिटीज एंड मैनेजरियल इनसाइट्स' रखा गया. सम्मेलन में फिल्मकारों, शिक्षाविदों, प्रबंधन विशेषज्ञों और शोधार्थियों ने भाग लिया. इसमें इस बात पर चर्चा हुई कि सिनेमा समाज को किस तरह प्रतिबिंबित करता है और प्रबंधन उससे क्या सीख सकता है. उदघाटन सत्र में एफटीआइआई पुणे के वाइस चांसलर धीरज सिंह, अशोका यूनिवर्सिटी की प्रो मोनिया एकियारी, आइआइएम रांची के निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव उपस्थित थे. निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि प्रबंधन केवल आंकड़ों और बैलेंस शीट तक सीमित नहीं है. आंकड़े बताते हैं कि क्या हुआ, लेकिन सिनेमा यह समझने में मदद करता है कि ऐसा क्यों हुआ. उन्होंने फिल्मों को एक सशक्त सिमुलेशन बताया, जो विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों से परे मानवीय मूल्यों और भावनाओं को समझने में मदद करती हैं.

प्रो मोनिया ने कहा कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं है. यह राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक कल्पना और वैश्विक सांस्कृतिक स्थिति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. धीरज सिंह ने कहा कि इतिहास में कई बार सिनेमा के अंत की भविष्यवाणी की गयी, लेकिन वह हर दौर में स्वयं को बदलता और विकसित करता रहा है मूक फिल्मों से लेकर टेलीविजन और अब डिजिटल प्लेटफॉर्म तक. मौके पर आइएसपीएसओ के डायरेक्टर अजीत एन माथुर, प्रो एन राजाराम, प्रो बिस्वजीत दास, प्रो एएफ मैथ्यू उपस्थित थे.

Prabhat Khabar_21.02.2026_P. 9

नेतृत्व और निर्णय लेना भी सिखाती हैं फिल्में

बोले प्रो. दीपक

- आईआईएम में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सिनेमा सम्मेलन का आगाज
- सिनेमा को प्रबंधन और सामाजिक वास्तविकता का सेतु बताया गया

रांची, विशेष संवाददाता। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची में शुक्रवार को 'भारतीय सिनेमाः सामाजिक वास्तविकताओं और प्रबंधकीय अंतर्दृष्टियों का सेतु' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के कुलपति धीरज सिंह, प्रो मोनिया अच्चियारी अशोका विवि, आईआईएम रांची के निदेशक प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव और अन्य विशेषज्ञ उपस्थित थे।

प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि प्रबंधन केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है, जहां आंकड़े बताते हैं कि 'क्या' हुआ, वहीं सिनेमा यह समझाता है कि 'क्यों' हुआ। उन्होंने फिल्मों को मानवीय मूल्यों और सामाजिक बुद्धिमत्ता का प्रभावी माध्यम बताया। सम्मेलन अध्यक्ष प्रो. विकास पाथे ने सिनेमा को नेतृत्व और निर्णय-निर्माण सिखाने वाला सशक्त माध्यम करार दिया।

मनोरंजन से परे प्रभावशाली शक्तिः सत्र में प्रो. मोनिया अच्चियारी ने अपने संबोधन में सिनेमा को राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक कल्पना और वैश्विक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ते हुए इसे मनोरंजन से परे एक प्रभावशाली शक्ति बताया। वहीं, अजीत एन माथुर- निदेशक, आईएसपीएसओ ने भारतीय सिनेमा और सामाजिक मूल्यों के अंतर्संबंधों पर बात की।

इसके बाद प्रो. सारी मटिला ने दृश्य माध्यमों की व्याख्या के विभिन्न आयामों पर चर्चा की। इसके बाद सिनेमा एंड सोसाइटी, विषय पर पैनल चर्चा में प्रो. एन राजाराम, प्रो. विश्वजीत दास, प्रो. एएफ मैथ्यू और प्रो. दया के थुस्सु ने भाग लिया। सम्मेलन में शोधार्थियों ने नेतृत्व मॉडल, सांस्कृतिक ब्रांडिंग, जेंडर प्रतिनिधित्व और फिल्म उद्योग के व्यवसायिक पहलुओं पर शोध पत्र प्रस्तुत किए।

Hindustan_21.02.2026_P. 13

आईआईएम रांची: सिनेमा के जरिए मैनेजमेंट गुर जाना

सिटी रिपोर्टर• आईआईएम रांची में 'सोशल रियलिटीज एंड मैनेजरियल इनसाइट्स' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का भव्य आगाज हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि मैनेजमेंट सिर्फ नंबरों का खेल नहीं है; सिनेमा हमें मानवीय भावनाओं और निर्णयों के पीछे का 'क्यों' समझने में मदद करता है। वहीं, एफटीआईआई पुणे के कुलपति धीरज सिंह ने सिनेमा के बदलते स्वरूप और डिजिटल प्लेटफॉर्म के दौर में क्रिएटर्स की जिम्मेदारी पर जोर दिया। स्पिक मैके के सहयोग से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पेश हुआ।

Dainik Bhaskar_21.02.2026_P. 6

आइआइएम रांची में सुरों की सजी महफिल

जागरण संवाददाता, रांची : इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट (आइआइएम) रांची में आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस आन इंडियन सिनेमा के सांस्कृतिक आयोजन के दौरान सुरों की एक मनमोहक महफिल सजी।

यह कार्यक्रम देश की सांस्कृतिक संस्था स्पीक मैके के सहयोग से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सुप्रसिद्ध कलाकार एवं युवा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित ओंकार श्रीकांत दादरकर ने अपनी प्रस्तुति से उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया। ओंकार श्रीकांत दादरकर ने अपने कार्यक्रम की शुरुआत राग कल्याण से की। जैसे-जैसे उनकी प्रस्तुति आगे बढ़ती गई, सुरों की मिठास, ताल और लय के संगम ने श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। उनके साथ तबले पर जायंतो सरकार ने सधे हुए अंदाज में संगत की। उनकी और ओंकार के बीच हुई जुगलबंदी ने कार्यक्रम में लय और ठहराव की अद्भुत छटा बिखेरी। वहीं हारमोनियम पर गौरव चटर्जी ने राग की आत्मा को सशक्त रूप से थामे रखा। इस सुरमयी संध्या में कलाकारों ने राग कल्याण तथा द्रुत तीन ताल में शुद्ध कल्याण की प्रस्तुति से संगीत का अनुपम कारवां आगे बढ़ाया। पूरा वातावरण शास्त्रीय संगीत की मधुरता से सराबोर हो उठा।

Dainik Jagran_21.02.2026_P. 6